भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 3 | **नवम्बर** 2002 | **अंक** 11

फिर बैतलवा डाल पर

उस समय की बात है जब पं० हजारीप्रसाद द्विवेदी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से निष्कासित होने पर चण्डीगढ़ चले गये थे। पंजाब विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० ए०सी० जोशी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति पद पर नियुक्त हुए। उन्होंने ही द्विवेदीजी की पंजाब विश्वविद्यालय में नियुक्ति की थी। काशी आने पर वे हजारीप्रसादजी को पुन: विश्वविद्यालय में लौटा लाये। द्विवेदीजी के निवास पर उनके शिष्यों और साहित्यिकों की बैठक लगने लगी। एक दिन पंडितजी के निवास पर डॉ० शिवप्रसाद सिंह, डॉ० बच्चन सिंह और इन पंक्तियों के लेखक बैठे थे। साहित्यिक चर्चा से अधिक व्याकरण और शब्दों को लेकर चर्चा चल रही थी, उस समय द्विवेदीजी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देश पर भाषा तथा व्याकरण पर कार्य कर रहे थे। तभी ग्रामीण जीवन के लोकप्रिय कथाकार विवेकी राय गाजीपुर से द्विवेदीजी से मिलने आए। वे अपनी नवप्रकाशित कृति भेंट करने लाये थे। उन्होंने भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित अपनी पुस्तक पंडितजी को भेंट की। पंडितजी ने पुस्तक हाथ में ली, एक क्षण उसके आवरण और टाइटिल को देखा, मुस्कराये और कहा ''क्यों विवेकी राय यह पुस्तक मुझ पर लिखी है—फिर बैतलवा डाल पर''। यह कहते हुए कक्ष पंडितजी के अट्टहास से गूँज उठा। विवेकी राय भौचक, वे समझ नहीं सके। पंडितजी ने पुस्तक का नाम पढ़ा—'**फिर बैतलवा डाल पर**'। द्विवेदीजी के चण्डीगढ़ से पुन: काशी लौटने को सार्थक कर रहा था पुस्तक का शीर्षक। **—पुरुषोत्तमदास मोदी**

इतिहास का सच

इतिहास का सच बड़ा निर्मम होता है, आगे आने वाली पीढ़ी को इसे झेलना पड़ता है। आज हमारे देश में इतिहास का सच क्या है, बच्चों को क्या सच बताना चाहिए, क्या नहीं इसको लेकर शिक्षा के क्षेत्र में महाभारत मचा हुआ है। इस महाभारत में राजनीतिक दल प्रमुख हैं। विभिन्न धारणाओं के इतिहासकार इनका पथ-प्रदर्शन कर रहे हैं। वामपंथी विचारक इतिहास के उज्जवल पक्ष को पूरी तरह नकार रहे हैं, उसमें विसंगतियाँ ढूँढ़ रहे हैं और देश की अस्मिता और संस्कृति को विवाद का विषय बना रहे हैं। इसका मूल कारण है अंग्रेजी शासन द्वारा भारतीय भाषा की उपेक्षा और अंग्रेजी की प्रतिष्ठा। परिणाम यह हुआ कि संस्कृत तथा अन्य भारतीय भाषाओं में लिखे गये इतिहास, संस्कृति, विज्ञान तथा दर्शन के ग्रन्थ विस्मृत कर दिए गए और ब्रिटिश शासन ने अपने शासन को प्रतिष्ठित और स्थापित करने के लिए भारतवासियों को असभ्य और असंस्कृत घोषित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। इतना ही नहीं देश की विभिन्न संस्कृतियों को परस्पर लड़ाने का भी काम किया और ऐसे ही इतिहास ग्रन्थों की रचना की गई।

हमारे संस्कृत विद्वान जो अंग्रेजी भाषा से अनभिज्ञ थे अपने इतिहास एवं संस्कृति को पाश्चात्य देशों के समक्ष वास्तविक रूप में नहीं रख सके। हमारे इतिहास पर अंग्रेजीदा इतिहासकारों की मानसिकता प्रभावी हो गई जो पाश्चात्य संस्कृति की विभिन्न विचारधाराओं से प्रभावित हैं। वामपंथी इतिहासकार भारत के इतिहास को उसी दृष्टि से देखते और आँकते हैं। वे यह स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं कि आर्य भारत के ही निवासी थे, कहीं बाहर से नहीं आये। इसके लिए वे अनेक प्रकार के तर्क देते हैं जबकि सारे पुरातात्विक तथा साहित्यिक साक्ष्य उनकी इस धारणा को चुनौती देते हैं।

वे पाश्चात्य इतिहासकारों के स्वर में इस देश के इतिहास को विकृत करने में कोई कसर नहीं छोड़ते। एक इतिहासकार महोदय ने एक शोध ग्रन्थ प्रस्तुत कर दिया कि प्राचीन भारत में गोमांस खाया जाता था। यह सिद्ध कर क्या यह बताना चाहते हैं कि गोहत्या और गोमांस भक्षण होता आया है अत: इस पर आपत्ति क्यों? देश की आस्था को आघात पहुँचाना क्या आज इतिहास का उद्देश्य है? प्राचीन भारत में घोड़े नहीं थे, घोड़े फारस से आये, अत: महाभारत जिसमें घोड़े जुते रथ का प्रयोग होता था, इससे यह सिद्ध करने का प्रयास किया जाता है कि आर्य भारत के मूल निवासी नहीं थे, वह बाहर से आये।

इस देश में तीन इतिहास लिखे गये—एक मुस्लिम शासकों और उनके दरबारियों द्वारा, दूसरा अंग्रेजों द्वारा, तीसरा वामपंथी इतिहासकारों द्वारा, इनमें कोई भी इतिहास तथ्यपरक नहीं है।

आजादी के बाद हमारे देश का इतिहास वामपंथी वैचारिकों द्वारा लिखा गया जो अनेक प्रकार की भ्रान्तियों तथा विसंगतियों से आक्रांत है। समाज तथा देशहित में इतिहास के सच को राजनीतिक तथा वैचारिक शस्त्र के रूप में प्रयुक्त किया गया है।

अभी भी इस देश के इतिहास को पुरातात्विक तथा अन्य साक्ष्यों के प्रकाश में लिखने की आवश्यकता है। इस देश की मूल संस्कृति तपोवन संस्कृति थी जहाँ इस देश की सभ्यता विकसित हुई। अभी भी उन तक हमारी पहुँच नहीं हो सकी है। ऐसे अनेक स्थल अभी भी इतिहास के अन्धकार में लुप्त हैं। नासा ने सिद्ध कर दिया है कि राम-रावण के समय रामेश्वरम से श्रीलंका तक

शेष भाग पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेषांश

पुल का निर्माण हुआ था। इस समय इसे एडम्स ब्रिज कहा जाता है। बालू की ईंटों से बना यह पुल भारत-श्रीलंका के बीच पाक जल डमरू मध्य में स्थित है तथा इसकी लम्बाई 30 किलोमीटर है। पुरातात्विक अध्ययन से पता चलता है कि श्री लंका में मानवों का बसाव पहली बार आदिम युग में साढ़े-सत्रह लाख वर्ष पूर्व हुआ था तथा यह पुल भी उसी समय का बताया जाता है। पिछले दिनों उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले में विंध्य पर्वत शृंखला के घने जंगलों की गुफा में 15 से 20 हजार वर्ष पुरानी चित्रकारी मिली है। सफेद बलुआ पत्थरों पर लाल रंग से चित्रकारी की गई है। चित्र में लोगों को नाचते-गाते और घोड़े पर आरूढ़ एक व्यक्ति जिसके हाथ में शस्त्र है, शिकार करते दिखाया गया है।

विद्वानों तथा राजनेताओं से अनुरोध है कि अपनी विचार-सरणि तथा पूर्वग्रहों के आलोक में देश के इतिहास के सच को विकृत न करें। हमें इसी इतिहास में जीना है इससे ऊर्जा ग्रहण करनी है और आगे बढ़ना है।

— पुरुषोत्तमदास मोदी

पुरस्कार-सम्मान

नोबेल पुरस्कार

इस वर्ष का नोबेल पुरस्कार हंगरी के उपन्यासकार **इमरे केर तेज** को दिया गया है। केर तेज का जन्म 9 नवम्बर 1929 को यहूदी परिवार में हुआ था। 1944 में पन्द्रह वर्ष की उम्र में केर तेज को नाजियों ने बन्दी बनाकर आसविट्ज के यातना शिविर में भेज दिया। यातना शिविर की यादों ने उन्हें रचनाकार बनाया—''मेरा लेखन एक प्रकार से स्वयं के प्रति अपनी यादों के प्रति प्रतिबद्ध है।'' 72 वर्षीय केर तेज के लिए इस पुरस्कार का मतलब है कि ''अब मैं बाकी की जिन्दगी आराम से गुजार लूँगा, मुझे पैसे की दिक्कत नही होगी।''

यान मार्टेन को बुकर पुरस्कार

अंग्रेजी साहित्य के लिए ब्रिटेन का प्रतिष्ठित बुकर पुरस्कार इस बार कनाडा के **यान मार्टेन** को उनकी कृति 'लाइफ आफ पी' को दिया जायगा। इस उपन्यास का मुख्य पात्र भारतीय है। इस उपन्यास का कथानायक पी नामक एक असाधारण बालक है जिसका लालन-पालन पांडिचेरी के एक चिड़ियाघर में होता है। उसका परिवार बाद में कनाडा आने के लिए निकल पड़ता है। उनकी नाव टूट जाती है और पी लकड़ी के एक फट्टे को पकड़ कर किसी तरह अपने प्राण बचाता है। इसी फट्टे पर उसके साथ एक लकड़बग्घा, एक औरंगउटान, एक जेबरा और एक बाघ भी है। मार्टेन को पुरस्कार स्वरूप 50,000 पौंड मिलेंगे जो गतवर्ष की राशि से तीस हजार पौंड अधिक है। भारत के जीवन में इतनी विविधता और रोचकता है कि विदेशी लेखक भारत में ही अपने कथानकों की तलाश करते हैं। पुरस्कार के दूसरे प्रत्याशी रोटिंगटन मिस्त्री का उपन्यास फैमिली मैटेसी का मुख्य पात्र भी भारतीय है।

बुकर पुरस्कार

ब्रिटेन का प्रमुख बुकर पुरस्कार अभी तक केवल अंग्रेजी पुस्तकों पर दिया जाता था, अब यह पुरस्कार विदेशी भाषाओं की पुस्तकों पर भी दिया जा सकता है।

चन्द्रकांत देवताले को पहल सम्मान

सुप्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका 'पहल' द्वारा दिया जाने वाला 'पहल सम्मान' इस वर्ष वरिष्ठ कवि **चन्द्रकांत देवताले** को दिया जाएगा। 1936 में मध्यप्रदेश के बैतूल के गाँव में जन्मे चन्द्रकांत देवताले हिन्दी के उन बहुत थोड़े कवियों में हैं, जो पिछले तीन दशक से भी अधिक समय से कविताएँ लिखते हुए नितांत निजी किन्तु केन्द्रीय पहचान बनाये हुए हैं।

आठ से अधिक कविता संग्रहों के प्रकाशन के अलावा उनकी अनेक कविताएँ भारत और विश्व की कई भाषाओं में अनुदित हुई हैं। श्री देवताले देश की अनेक शीर्षस्थ साहित्यिक सांस्कृतिक संस्थाओं से प्रमुख रूप से सम्बद्ध रहे हैं और मध्यप्रदेश साहित्य परिषद के उपाध्यक्ष रहे हैं। इन दिनों वह विक्रम विश्वविद्यालय में प्रेमचंद सृजन पीठ के निदेशक हैं। 'पहल सम्मान' के अंतर्गत 11 हजार रुपये की राशि, प्रतीक चिह्न और प्रशस्ति प्रदान किया जाता है। सम्मान समारोह दिल्ली में अगले वर्ष फरवरी में होगा जिसमें हिन्दी और भारतीय भाषाओं के अनेक रचनाकार भाग लेंगे।

कथाक्रम सम्मान

वर्ष 2002 का आनन्द सागर कथाक्रम सम्मान प्रख्यात कथाकार **शिवमूर्ति** को प्रदान किया जायगा। 'कथाक्रम' पत्रिका के सम्पादक शैलेन्द्र सागर के अनुसार शिवमूर्ति ग्रामीण जीवन के दारुण यथार्थ को कथा साहित्य में अंकित करने के लिए माने जाते हैं। उनकी कहानियाँ 'तिरिया चरित्तर', 'केसर कस्तूरी' साहित्य की उपलब्धि है।

श्रीकृष्ण तिवारी यू०पी० रत्न

काशी के नवगीतकार **श्री श्रीकृष्ण तिवारी** को उनके नवप्रकाशित काव्य संकलन 'सन्नाटे का गीत' के लिए आल इण्डिया कान्फ्रेंस ऑफ इंटलेक्युअल्स के यू०पी० चैप्टर की ओर से पूर्व निर्वाचन आयुक्त जी०वी०जी० कृष्णमूर्ति की अध्यक्षता में लखनऊ में आयोजित समारोह में राज्यपाल आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री ने सम्मानित किया। सम्मानस्वरूप मानपत्र, राजस्थानी साफा और 21 हजार रुपये नकद प्रदान किए गए।

इंद्रप्रस्थ साहित्य भारती पुरस्कार

दैनिक जागरण के सम्पादक और कवि स्व० नरेन्द्रमोहन के नाम से साहित्य सम्मान साहित्यकार रविन्द्र जुगरान को उनकी पुस्तक 'रक्त रंजित जम्मू कश्मीर' के लिए दिया गया। साहित्य भारती सम्मान डॉ० रामप्रकाश, गुरुदत्त सम्मान सुश्री आस्था नवल, भवानीप्रसाद मिश्र सम्मान मदनलाल वर्मा 'क्रान्त', आचार्य चतुरसेन सम्मान पूर्णचंद्र कांडपाल, डॉ० विजेंद्र स्नातक सम्मान पूर्व मेजर जनरल सूरज भाटिया, डॉ० रामलाल वर्मा सम्मान अनिलकुमार मित्तल, डॉ० कमला रत्नम सम्मान श्रीमती शैल सक्सेना और सुधा भार्गव 'दृष्टा', डॉ० सत्यपाल चुघ सम्मान कमल दर्पण, डॉ० प्रशांत वेदांलकार सम्मान शशिकांत, उदयशंकर भट्ट सम्मान बाबा कानपुरी, डॉ० नगेन्द्र सम्मान मधुर शास्त्री, यशपाल जैन सम्मान सुश्री अपर्णा शर्मा और जैनेन्द्रकुमार सम्मान नरेश गुप्त 'नीरस' को दिया गया।

सम्मानित साहित्यकारों को कन्नड़ भाषा के साहित्यकार एवं संघ के सह सरकार्यवाह एच०वी० शेषाद्रि ने माँ सरस्वती की प्रतिमा, नारियल और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया।

गोविन्दचन्द्र पांडे साहित्य अकादमी के फेलो

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति और प्राच्य विद्या के प्रकाण्ड विद्वान **डॉ० गोविन्दचन्द्र पांडे** को साहित्य अकादमी का फेलो चुना गया। यह अकादमी का सर्वोच्च सम्मान है। अकादमी की सामान्य परिषद ने यूनान के लेखक व अनुवादक बासीलिस वितसाक्सिस और रूसी विद्वान मेबोनी पेत्रोविच चेलीशेव को अपना मानद फेलो चुना है। इस समय इलाहाबाद म्यूजियम सोसाइटी के अध्यक्ष प्रो० पांडे भारतीय विद्या संस्कृति तथा धर्म दर्शन पर अनेक ग्रन्थ लिखे हैं।

15 हिन्दी सेवी विद्वान सम्मानित

11 अक्टूबर 2002 को महामहिम राष्ट्रपति डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम ने राष्ट्रपति भवन में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा द्वारा आयोजित वर्ष 2001 का हिन्दी सेवी सम्मान 15 विद्वानों को प्रदान किया। चार विद्वान् हिन्दी प्रचार-प्रसार एवं हिन्दी प्रशिक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए **गंगाशरण सिंह पुरस्कार** से सम्मानित किए गये— 1. डॉ० एम०के० भारती रमणाचार्य, बैंगलूर (कर्नाटक), 2. श्री अरिबम घनश्याम शर्मा, इम्फाल (मणिपुर), 3. श्री बी० चिन्नैयन, तिरुच्चिरापल्ली (तमिलनाडु), 4. डॉ० मुरलीधर बन्सीलाल शहा, धुले (महाराष्ट्र); दो विद्वान हिन्दी पत्रकारिता तथा

रचनात्मक साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए **गणेशशंकर विद्यार्थी पुरस्कार** से सम्मानित किए गए—1. श्री बालेश्वर अग्रवाल (नई दिल्ली), 2. श्री शिवकुमार गोयल (गाजियाबाद); दो विद्वान् वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य तथा उपकरण विकास के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए **आत्माराम पुरस्कार** से सम्मानित किए गए—1. डॉ० महाराज नारायण मेहरोत्रा, वाराणसी, 2. डॉ० श्री गोपाल काबरा, जयपुर (राजस्थान); तीन विद्वान हिन्दी के विकास से सम्बन्धित सर्जनात्मक/आलोचनात्मक क्षेत्रों में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए **सुब्रह्मण्यम भारती पुरस्कार** से सम्मानित किए गये—1. श्री गोविन्द मिश्र, भोपाल (मध्य प्रदेश), 2. डॉ० कन्हैया सिंह, आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश), 3. श्री कृष्णवल्लभ द्विवेदी, लखनऊ (उत्तर प्रदेश); दो विद्वान हिन्दी में खोज और अनुसन्धान करने तथा यात्रा विवरण आदि के लिए **महापण्डित राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार** से सम्मानित किए गए—1. डॉ० कमलकिशोर गोयनका (दिल्ली), 2. डॉ०

ग्राम जीवन के कथाकार विवेकी राय को सम्मानित करते हुए राष्ट्रपति डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम साथ में मानव संसाधन शिक्षा मंत्री डा० मुरलीमनोहर जोशी

विवेकी राय, गाजीपुर (उत्तर प्रदेश) तथा दो विद्वान विदेशों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय कार्य के लिए **डॉ० जार्ज ग्रियर्सन पुरस्कार** से सम्मानित किए गए—1. श्री नरेश भारतीय (लेखकीय नाम) उर्फ श्री नरेश अरोड़ा, इंगलैण्ड (यू०के०), 2. डॉ० तामियो मिजोकामि, जापान।

समारोह की अध्यक्षता डॉ० मुरली मनोहर जोशी, मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार तथा अध्यक्ष, केन्द्रीय हिन्दी शिक्षण मण्डल ने की। अध्यक्षीय भाषण देते हुए प्रोफेसर जोशीजी ने कहा—आज हिन्दी का अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप उभर रहा है साथ ही हिन्दी के विस्तार की असीम सीमाएँ हैं। समय की माँग के अनुरूप आज अन्य भारतीय भाषाओं के अध्ययन की आवश्यकता है। प्रत्येक भाषा चिंतन के नए द्वार खोलती है। सभी भाषाएँ देश-विदेश की सांस्कृतिक विविधता को समझने का माध्यम हैं और हिन्दी ही वह माध्यम है जो सभी भाषाओं को जोड़ कर देश व विदेश में हमें अपनी पहचान बनाने में समर्थ बना सकती है।

भारतीय हिन्दी परिषद का 34वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन

भारतीय हिन्दी परिषद के 34वें राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर हिन्दी के मूर्धन्य साहित्य समीक्षक डॉ० रामचन्द्र तिवारी को मानपत्र प्रदान कर सम्मानित करते हुए उत्तर प्रदेश के राज्यपाल महामहिम आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री तथा गोरखपुर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० रेवतीरमण पाण्डेय

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्रेक्षागृह में उत्तर प्रदेश के राज्यपाल आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री ने 12 अक्टूबर 2002 को भारतीय हिन्दी परिषद के 34वें राष्ट्रीय अधिवेशन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा—देश में आजादी मिलने के बाद से मातृभाषा के प्रति सम्मान का निरन्तर कम होते जाना चिंतनीय है। हिन्दी अनुवाद की भाषा बनती चली जा रही है। इसे अनुवाद की भाषा बनने से रोकना होगा और इसके लिए नई पीढ़ी को नेतृत्व सँभालना चाहिए।

हम आज एक विलक्षण स्थिति से गुजर रहे हैं। भारतीय स्वाधीनता संग्राम के समय जो हिन्दी संघर्ष की भाषा होती थी, जिसके प्रति हम आम जनता में अगाध श्रद्धा होती थी, आजादी मिलने के बाद वह श्रद्धा कम होती जा रही है। राजभाषा सम्मेलनों के नाम पर सरकारी खर्चों पर होटलों में कार्यक्रम आयोजित कर लिये जाते हैं और राजभाषा पत्रिकाएँ कुछ अनूदित रचनाएँ छापकर अपना कर्तव्य निर्वहन कर लेती हैं। हिन्दी में मौलिक लेखन को प्रोत्साहन नहीं मिल रहा है।

यह भी चिंतनीय है कि परिषद सहित नागरी प्रचारिणी सभा और हिन्दी साहित्य सम्मेलन जैसी संस्थायें भी शिथिल होती गयी हैं। अध्ययन-अध्यापन और शोध के साथ-साथ नियमित बैठकों और सम्मेलनों का दौर समाप्त हो गया है। यह राष्ट्रभाषा के लिए उचित नहीं है।

अंग्रेजी के वर्चस्व के खिलाफ एक संग्राम होना चाहिए। प्रत्येक भारतीय भाषा का कार्य पूर्ण प्रतिष्ठा के साथ होना चाहिए। हिन्दी का अर्थ समग्र जीवन होना चाहिए। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि अब अच्छे विद्यार्थी हिन्दी पढ़ने आना नहीं चाहते और अंग्रेजी में लिखे हुए साहित्य को भारतीय साहित्य कहा जा रहा है। अंग्रेजी का यह मकड़जाल सारे देश को ग्रस रहा है। उन्होंने कहा कि हमारी मातृभाषायें आगे बढ़ें इसके लिए काफी तैयारी और दृढ़ संकल्प चाहिए। यह कार्य तभी हो सकेगा जब नये लोग उत्तरदायित्व के लिए आगे आयें।

परिषद के सभापति प्रो० सूर्यप्रसाद दीक्षित ने कहा कि हिन्दी मातृभाषा नहीं है बल्कि एक संस्कृति है और हमारी राष्ट्रीय जातीय अस्मिता है। आज की विश्व व्याप्त प्रचंड स्पर्धा के बीच प्राध्यापकीय हिन्दी से बड़ी अपेक्षाएँ हैं। कई चुनौतियाँ हैं किन्तु परिषद के मंच पर समवेत होकर हम आसन्न संकट का कोई न कोई मुक्तिमार्ग अवश्य ही निकाल लेंगे यह मेरी मंगल आशा है।

भारतीय हिन्दी परिषद के नवनिर्वाचित पदाधिकारी

अध्यक्ष : डॉ० रामकमल राय, इलाहाबाद
उपाध्यक्ष : श्री सभापति मिश्र, इलाहाबाद;
डॉ० अमरनाथ शर्मा, कोलकाता
डॉ० कामता कमलेश, अमरोहा
महामंत्री : श्री त्रिभुवननाथ शुक्ल
जबलपुर
साहित्य मंत्री : श्री यतीन्द्र तिवारी, कानपुर
प्रबन्ध मंत्री : श्री गिरिजा राय, इलाहाबाद
कोषाध्यक्ष : डॉ० निर्मला अग्रवाल
इलाहाबाद
प्रचार मंत्री : डॉ० धर्मदेव तिवारी, ईटानगर

इनके अतिरिक्त कार्यकारिणी समिति के 20 सदस्य चुने गये।

विविध

'तुलसी रतना दीप' का लोकार्पण

16 सितम्बर 2002 को महाराष्ट्र मण्डल के तिलक हाल में 'आंचलिक साहित्यकार परिषद' छतरपुर के तत्वावधान में प्रो० (डॉ०) सुरेन्द्रकुमार सिन्हा 'अंजलि' रचित काव्य कृति 'तुलसी रतना दीप' का लोकार्पण मानस मर्मज्ञ जिलाध्यक्ष छतरपुर श्री रामानन्द शुक्ल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठी

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून के राजभाषा अनुभाग द्वारा प्रत्येक तिमाही में एक आन्तरिक हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठी आयोजित करने की शृंखला प्रारम्भ की गई है। इस शृंखला में आयोजित संगोष्ठियों में संस्थान के अनुसंधान-क्षेत्र से सम्बन्धित विषयों पर संस्थान के वैज्ञानिक मौलिक रूप से हिन्दी में लिखे शोध-आलेख प्रस्तुत करते हैं। इस क्रम में अब तक दो संगोष्ठियाँ आयोजित की जा चुकी हैं।

हिन्दी दिवस पर 'विकल्प' के सम्पादक श्री दिनेश चमोला ने कहा

हिन्दी भारतीय स्वतंत्रता की संवाहिका रही है। हमें अपने उत्कृष्ट विज्ञान को अपनी भाषाओं विशेषकर हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं में इस महत्व के साथ विकसित करना चाहिए कि अन्य भाषा-भाषी लोग उस उत्कृष्टता को जानने समझने के लिए हिन्दी सीखें। जहाँ राजनीति तोड़ने का कार्य करती है वहाँ भाषा जोड़ने का व एक दूसरे को भावनात्मक स्तर पर निकट लाने का कार्य करती है। भाषा विचार देती है। इसलिए हमें अपनी विशेषज्ञता व सक्षमता का परिचय हिन्दी भाषा के माध्यम से देना चाहिए।

वर्तमान शिक्षा मौलिक रचनात्मकता को प्रोत्साहित नहीं करती

वर्तमान शिक्षा मौलिक रचनात्मकता को प्रोत्साहित नहीं करती। सन् 2030 तक वर्तमान जनसंख्या दर के कारण विकसित देशों में 65 प्रतिशत लोग साठ वर्ष के ऊपर होंगे, जबकि भारत में 55 प्रतिशत जनसंख्या 25 वर्ष के नीचे के लोगों की होगी। इस युवजन प्रतिभा के नैसर्गिक विकास के लिए भारत को विज्ञान के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए अधिक से अधिक प्रयत्न तथा विज्ञान एवं तकनीकी में प्रशिक्षित मानव संसाधन तैयार करने हैं, क्योंकि भावी अन्तरराष्ट्रीय राजनीति में तकनीकी एवं विज्ञान का बोलबाला रहेगा। **— वी०जी० भिड़े**

पूर्व कुलपति, पुणे विश्वविद्यालय

दो-तिहाई कवि तथा एक-तिहाई आलोचक हूँ

शुद्ध आलोचना की ही चार-पाँच पत्रिकाएँ निकलती हैं—आलोचना, पूर्वग्रह, समीक्षा, कसौटी, पुस्तक वार्ता। आलोचना इसलिए लिखते हैं, हमको लगता है कि समय और समाज में साहित्य व कलाओं के लिए जगह बननी चाहिए। अगर अच्छा लगता है तो दूसरों की साझेदारी करने के लिए तथा खराब लगता है तो चोट करने के लिए भी आलोचना लिखी जाती है।

कवि भी हूँ और आलोचक भी। दो-तिहाई कवि तथा एक तिहाई आलोचक हूँ। बिना श्रेष्ठ बुद्धि के कविता लिखना सम्भव ही नहीं। कविता लिखने के लिए अकेली बुद्धि ही नहीं कार्य करती अपितु वह भाव तथा संवेदना के साथ सक्रिय होती है। **— अशोक वाजपेयी**

शिक्षा उद्योग

इस भौतिकवादी समाज में शैक्षिक संस्थाएँ व्यावसायिक केन्द्र बन गये हैं। शिक्षा की बड़ी-बड़ी दूकानें खुल गई हैं। ऐसी दुकानों के लुभावने बड़े-बड़े विज्ञापन औद्योगिक विज्ञापनों की तरह अखबरों में छपते हैं। कोचिंग शिक्षा केन्द्र प्रत्येक गली-मुहल्ले में खुल गये हैं। परीक्षा पास करने के गुण सिखाने के साथ-साथ परीक्षा में उत्तीर्ण भी कराते हैं और अपनी इस उपलब्धियों के विज्ञापन छात्रों के चित्रों सहित छपवाते हैं।

इससे आगे बढ़िए तो विश्वविद्यालयों में जहाँ शोध की आवश्यकता होती है, ठीके पर शोध ग्रन्थ तैयार हो जाते हैं, उन्हें स्वीकृत भी करा देते हैं और नौकरी दिलवाने में सहायक होते हैं।

आज देश में शिक्षा की यह दशा है।

भूमण्डलीकरण के युग में विदेशी प्रतिभाएँ भी इस क्षेत्र में तेजी से प्रवेश कर रही हैं। उनकी शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है। अंग्रेजी माध्यम से पढ़कर निकलने वाले क्या भारत की आम जनता से परस्पर संवाद कर सकेंगे। अपने देश के भूगोल इतिहास को आत्मसात कर सकेंगे?

शिक्षा ने उद्योग का रूप ले लिया है। धनी वर्ग ही उच्च आधुनिक शिक्षा प्राप्त कर सकेगा। इससे समाज में साधन सम्पन्न और साधन हीन का अन्तर बढ़ता जायगा। विशाल जनसंख्या का यह देश क्या कभी सबको समान शिक्षा के अवसर सुलभ करा सकेगा?

डायरी के चुनिंदा अंशों का वाचन

नरेन्द्र मोहन की शीघ्र प्रकाश्य डायरी 'साथ-साथ मेरा साया' के चुनिंदा अंशों के वाचन का एक कार्यक्रम साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित किया गया। नरेन्द्र मोहन ने कहा—''अपनी कृतियों में लेखक जितना, जैसा झलकता है, सामने मंच पर जैसा दिखता और हरकतें करता है, डायरी उस सब का पिछवाड़ा है। यहाँ जो उद्वेलन होता है, वही रचना का जन्म-घड़ी है। यहीं से बनती है रचना की तासीर और उठती हैं उनकी आवाजें। इस नेपथ्य के बिना न सृजन है न सर्जक।'' डायरी हो या कोई भी रचना, लिखे हुए का सामना तो करना ही होगा, उसकी कीमत चुकानी ही होगी।

लेखकों-श्रोताओं को लगा जैसे वे स्मृति और इतिहास, वर्तमान और अतती की अनोखी और मर्मान्तक अनुभूतियों के मिलन-स्थल पर आ खड़े हुए हों।

शोध की वास्तविकता

इधर शोध ग्रन्थों पर चर्चा शुरु होते ही इसकी वास्तविकता प्रकट होने लगती है। अम्बेडकर विश्वविद्यालय में एक शिक्षिका ने स्वयं पी-एच०डी० हुए बिना छह छात्रों को पी-एच०डी० करा दिया। रसायन विभाग में विभागाध्यक्ष पिता अपने पुत्र के गाइड बन गये। धीरे-धीरे इस गोरख धन्धे की अनेक परतें खुलती जा रही हैं। बिना सिनोपसिस दाखिल किये शोध करने की अनुमति मिल जाती है। एक ही विषय के अनेक समानार्थी शोध ग्रन्थों पर पी-एच०डी० मिल जाती है। विश्वविद्यालयों में शोध में हो रही विकृतियों के प्रति जागरूकता आ रही है। अब वह दिन दूर नहीं जब शोध उपाधियाँ रद होने लगेंगी।

दैवी-प्रतिभा

जीवन में कभी-कभी ऐसे अद्‌भुत तथ्य देखने को मिलते हैं जिनकी असाधारणता का केवल एक ही समाधान है—दैवी प्रतिभा। ऐसा ही एक असाधारण तथ्य भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के जीवन के साथ जुड़ा है।

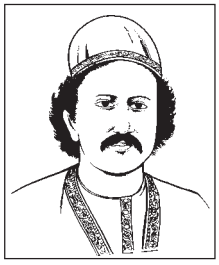

भारतेन्दु का जन्म 9 सितम्बर 1850 को हुआ था। सन् 1862 में भारतेन्दु मुश्किल से बारह वर्ष के थे। इसी वर्ष सन् 1862 में महाराजा बनारस के संरक्षत्व में पण्डित ताराचंद तर्करत्न की रस-मीमांसा पर पुस्तक 'शृंगार-रत्नाकर' प्रकाशित हुई। ताराचंदजी ने पहिले पारम्परिक नौ रस गिनाए, यथा—(1) शृंगार, (2) हास्य, (3) करुण, (4) रौद्र, (5) अद्‌भुत, (6) वीभत्स, (7) वीर, (8) भयानक, (9) शांत

और फिर लिखा 'किन्तु हरिश्चन्द्र के अनुसार' रस की संख्या चौदह है। हरिश्चन्द्र ने जिन पाँच रसों को नौ-रस में और जोड़ कर रस की संख्या चौदह की है, वे हैं— (10) भक्ति अथवा दास्य, (11) प्रेम अथवा माधुर्य, (12) साख्य, (13) वात्सल्य, (14) प्रमोद अथवा आनन्द।

ताराचंद की पुस्तक जब प्रकाशित हुई तब हरिश्चन्द्र मात्र बारह वर्ष के थे। जाहिर बात है उपरोक्त पाँच नए रस भारतेन्दु ने पुस्तक प्रकाशन के कुछ पहिले नव-रस में जोड़े होंगे, जो चर्चित हुए।

अब यह ईश्वरीय प्रतिभा नहीं तो और क्या है?

— गोविन्दप्रसाद श्रीवास्तव

अवकाशप्राप्त जिला जज

स्मृति-शेष

लक्ष्मीकांत वर्मा

प्रख्यात साहित्यकार एवं समाजवादी चिन्तक **लक्ष्मीकान्त वर्मा** का 17 अक्टूबर 2002 को प्रात: 5 बजे इलाहाबाद में एक निजी नर्सिंग होम में निधन हो गया। वे 80 वर्ष के थे।

15 फरवरी 1902 को बस्ती में जन्म हुआ। प्रयाग के साहित्यकारों ने मुंशी प्रेमचंद की परम्परा में वर्माजी को मुंशी नाम से सम्बोधित करते रहे। दो वर्ष पूर्व प्रकाशित उनका नया उपन्यास 'मुंशी रायजादा' उनके विराट व्यक्तित्व का द्योतक है। वे उसका दूसरा भाग भी लिख रहे थे। अपने पैतृक नगर बस्ती के समाज का विविधतापूर्ण चित्रण उन्होंने किया है। वर्माजी ने अनेक पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन किया। नयी कविता के पूरे आन्दोलन में अग्रणी थे। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के अध्यक्ष रूप में उन्होंने सराहनीय कार्य किये। नयी कविता और साहित्य के क्षेत्र में नये प्रयोग, खाली कुर्सी की आत्मा, नई कविता के प्रतिमान, नये प्रतिमान पुराने निकष तथा अतुकांत, तीसरा पक्ष, कंचन मृग, चित्रकूट चरित्र आदि कविता संग्रह व आदमी का जहर, रोहणी एक नदी है सहित कई नाटक संग्रह आदि रचनाओं के अलावा उन्होंने दर्जनों उपन्यासों और आलोचना ग्रन्थों की भी रचना की। उन्हें हिन्दी संस्थान का लोहिया सम्मान और हिन्दुस्तानी अकादमी का एकेडेमी अवार्ड के अतिरिक्त अन्य अनेक पुरस्कार मिले। उनकी इच्छा थी गरीब रचनाकारों को ध्यान में रखकर एक ऐसे कोष की स्थापना की जाये जिससे न केवल उनकी आर्थिक सहायता हो बल्कि उन्हें पेंशन भी मिले। एक ऐसे जीवन्त साहित्यकार के निधन से हिन्दी साहित्य जगत की अपूर्णीय क्षति हुई है। वे अपनी कर्मठता के लिए बराबर याद किये जाते रहेंगे। विनम्र श्रद्धांजलि।

हरभजन सिंह स्वर्गीय

सुप्रसिद्ध पंजाबी लेखक **हरभजन सिंह** का सोमवार 21 अक्टूबर 2002 को दिल्ली में निधन हो गया। वे 83 वर्ष के थे। साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित हरभजन सिंह दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रोफेसर रहे। उन्हें मध्य प्रदेश सरकार से कबीर सम्मान और बिड़ला फाण्डेशन से सरस्वती सम्मान प्राप्त हुआ था। वह असम में पैदा हुए, शिक्षा लाहौर में हुई और अध्यापन जीवन की शुरुआत दिल्ली में की। वे उन मुट्ठी भर साहित्यकारों में से थे जिन्होंने जीवन की विराटता को उसकी समूची व्यापकता में अपने साहित्य में उड़ेला था। हिन्दी और पंजाबी साहित्य को एक दूसरे के निकट लाने में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान था। वे अपनी महत्त्वपूर्ण और बहुआयामी रचनाओं के कारण हमेशा प्रासंगिक बने रहेंगे।

क्रान्तिकारी उपन्यासकार यशपाल की पत्नी

शहीदे आजम भगत सिंह के साथी क्रांतिकारी और चर्चित लेखक की धर्मपत्नी प्रख्यात क्रांतिकारी **श्रीमती प्रकाशवती पाल** को दिल का दौरा पड़ने से गत 17 सितम्बर 2002 को लखनऊ में निधन हो गया। वे नब्बे वर्ष की थीं।

31 जनवरी 1912 को लाहौर में जन्मीं प्रकाशवती जी की यशपालजी से शादी अगस्त 1936 में जेल में हुई थी। 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' में भगत सिंह, भगवतीचरण वोहरा, चन्द्रशेखर आजाद आदि के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर यशपाल की जीवनसंगिनी प्रकाशवतीजी की 1986 में एक आँख चली गयी थी, चूँकि उन्होंने अपनी जीवन यात्रा को कलमबद्ध करने का संकल्प ले रखा था, इसलिए अपनी एक आँख के सहारे ही उन्होंने अपनी चर्चित पुस्तक 'लाहौर से लखनऊ तक' लिखी। 1994 में विप्लव प्रकाशन से इस पुस्तक का पहला संस्करण आया था।

आपका पत्र

प्रियवर मोदीजी,

'भारतीय वाङ्मय' का नियमित पाठक हूँ और प्रशंसक भी। आपके सम्पादन में नई मौलिक रचनायें पढ़ने को मिलती हैं, विशेषकर आपके अपने लिखे लेख। यह इसकी विशिष्टता है जो मुझे पसन्द है। सितम्बर अंक के पहले पृष्ठ के दोनों लेख बहुत ही अच्छे लगे। मैं पत्रिका की सफलता की कामना करता हूँ और आपके स्वास्थ्य के प्रति भी मेरी शुभकामनायें हैं।

विश्वनाथ

राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली-6

आपका सम्पादकीय कौशल सचमुच सराहनीय है। 'करहु विलम्ब न भ्रात अब' सम्पादकीय राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में ज्वलन्त विषय पर आधृत है। यह हमारे लिए अत्यन्त पीड़ादायक एवं लज्जाजनक स्थिति है कि देश की स्वाधीनता के बाद इतना काल खण्ड बीत जाने के बावजूद राष्ट्रभाषा हिन्दी के संदर्भ में हम भारतेन्दु के हृदय के शूल को नहीं मिटा सके हैं।

पत्रिका के छोटे से कलेवर में आपने बड़ी ही सारगर्भित तथा उपादेय सामग्री का समावेश किया है। वैविध्यपूर्ण सूचनाओं और सटीक टिप्पणियों को देखकर लगता है कि जिस प्रकार की सामग्री इस लघुकाय पत्रिका में है वैसी तो विशालकाय ग्रन्थ भी नहीं दे पाते हैं। आज जब कि हमारे लोग भारतीय संस्कृति से मुँह मोड़ रहे हैं, इस छोटी सी पत्रिका के माध्यम से आप उन्हें अपनी सांस्कृतिक चेतना, धर्म साधना, साहित्य सृष्टि तथा कला छवि का दर्शन कराके बहुत बड़ी राष्ट्र सेवा कर रहे हैं। इस सत्प्रयास के लिए बहुत बहुत साधुवाद।

श्याम विद्यार्थी

केन्द्र निदेशक, दूरदर्शन केन्द्र, डिब्रूगढ़ (असम)

नवीनतम प्रकाशन

इतिहास-संस्कृति-कला

भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क *डॉ० आर० गणेशन्* 400.00
महाभारत का काल निर्णय *डॉ० मोहन गुप्त* 200.00
प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु *डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल* 650.00
Daishik Shastra *Badri Shah Thuldharia* 150.00
काशी का इतिहास *डॉ० मोतीचन्द्र* 650.00

अध्यात्म, योग, तंत्र साधना

सृष्टि और उसका प्रयोजन (मेहेर बाबा) *शिवेन्द्र सहाय* 65.00
यजुर्वेदीय सन्ध्या-तर्पण-विधि *देवेन्द्रनाथ शुक्ल* 30.00
बृहत श्लोक संग्रह (सर्वधर्म समभाव) *सम्पादक : प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 200.00
गङ्गा : पावन गङ्गा *डॉ० शुकदेव सिंह* 25.00
जपसूत्रम (भाग-1) *स्वामी प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती* 150.00
पूर्वांचल के संत-महात्मा *सं० : परागकुमार मोदी* 70.00
स्वामी दयानन्द जीवनगाथा *डॉ० भवानीलाल भारतीय* 120.00
सनातन हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म *श्यामसुन्दर उपाध्याय* 75.00

साहित्य-समीक्षा

फणीश्वरनाथ रेणु और उनका कथा साहित्य *डॉ० रागिनी वर्मा* 320.00
अक्षर बीज की हरियाली *डॉ० वेदप्रकाश अमिताभ* 180.00
धर्म, दर्शन और विज्ञान में रहस्यवाद *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा, वसुंधरा मिश्र* 250.00
भवानीप्रसाद मिश्र और उनका काव्य संसार *डॉ० अनुपम मिश्र*
'स्वदेश' की साहित्य-चेतना *डॉ० प्रत्यूष दुबे*
प्रसाद स्मृति एवं साहित्य अनुचिन्तन *सं० : पुरुषोत्तमदास मोदी*
क्रांतिकारी कवि निराला (संशोधित परिवर्धित) *डॉ० बच्चन सिंह* 120.00
मध्ययुगीन काव्य प्रतिभाएँ *डॉ० रामकली सर्राफ* 150.00

भोजपुरी साहित्य

भोजपुरी लोक साहित्य *डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय* 400.00
पुरइन पात (पाठ्य ग्रन्थ) *सं० : डॉ० अरुणेश 'नीरन', चितरंजन मिश्र* 80.00
पुरइन पात (भोजपुरी साहित्य संचयन) '' 200.00
बदमाश दर्पण (तेग़ अली) *सं० : श्री नारायणदास* 60.00
चुनल गीत *सं० : कृपाशंकर शुक्ल* 80.00

साहित्यिक निबन्ध

त्रिवेणी *आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, सं० डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 30.00

चिन्तामणि *आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, सं० डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 40.00

निबन्ध संकलन *डॉ० रामकली सराफ* 40.00

भाषाशास्त्र

A Comparative Study of Bhojpuri & Bengali *Dr. Shruti Pandey*

उपन्यास

हस्तिनापुर का शूद्र महामात्य *युगेश्वर* 140.00

चरित्रहीन *आबिद सुरती* 180.00

कहानी

प्रेमचंद की प्रतिनिधि कहानियाँ *सं० डॉ० कुमार पंकज* 80.00

प्रश्नचिन्ह तथा अन्य कहानियाँ *अनीता पण्डा* 80.00

नाटक

मांदर बज उठा (रेडियो नाटक संकलन) *अनिन्दिता* 150.00

काव्य

कहकशाँ (शायरी) *हशम तुराबी* 50.00

प्रसाद की चतुर्दशपदियाँ *सं० : डॉ० किशोरीलाल गुप्त* 50.00

धूमिल की कविताएँ *सं० : डॉ० शुकदेव सिंह* 80.00

कृष्णायन *रामबदन राय* 200.00

राष्ट्रप्रेम के गीत *सं० : कृपाशंकर शुक्ल* 150.00

संस्मरण, जीवनचरित

अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद' *सं० : पुरुषोत्तमदास मोदी* 150.00

संस्कृत साहित्य

संस्कृत के प्रतीकात्मक नाटक *डॉ० आशा त्रिपाठी* 300.00

पत्रकारिता

The Rise And Growth of Hindi Journalism *Dr. R.R. Bhatnagar, Ed. by Dr. Dhirendra Singh* 800.00

हिन्दी पत्रकारिता का नया स्वरूप *बच्चन सिंह, पत्रकार* 250.00

अभिनय कला, भाषण, वार्ता

बोलने की कला *डॉ० भानुशंकर मेहता* 250.00

समाजशास्त्र

समाजदर्शन की भूमिका *डॉ० जगदीशसहाय वर्मा* 150.00

अर्थशास्त्र एवं वाणिज्य

भारतीय सामाजिक एवं आर्थिक चिन्तन *कृष्णकुमार सोमानी* 75.00

SCIENCE

Indian Artificial Satelite *Dr. S.N. Ghosh* 250.00

भारतीय वाङ्मय तथा विश्वविद्यालय प्रकाशन की ओर से

दीपावली की शुभकामना

पुस्तक समीक्षा

वाणी का शुक्ल पक्ष

बोलना भी एक कला है— यह रंगमंच का कोई अभिनेता किसी मंच का भाषणकर्त्ता अथवा वाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग लेने वाला विद्यार्थी अच्छी तरह जानता है। सामान्य आदमी भी अगर इस कला का अभ्यास करे तो वक्तृत्व की विशेषता उसे भी हासिल हो सकती है। अंग्रेजी में बोलने की कला सिखाने वाली दर्जनों पुस्तकें हैं, मगर हिन्दी में ऐसी पुस्तकों का अभाव है। हाल ही में डॉ० भानुशंकर मेहता की किताब 'बोलने की कला' सामने आयी है। यह इस विधा की सभी महत्वपूर्ण बातों पर प्रकाश डालने वाली किताब है। सन् 1967 में कैथलीन रिच की पुस्तक 'द आर्ट ऑफ स्पीच' आयी थी जो नाटक के छात्रों की उपयोगिता को ध्यान में रखकर लिखी गयी थी। मेहता ने उस किताब से प्रेरणा लेकर यह पुस्तक लिखी है। पुस्तक में श्वास प्रक्रिया, वाणी के प्रादुर्भाव से लेकर दोष दर्पण और काव्यपाठ से लेकर भाषण की कला तक पर विस्तार से विचार किया गया है। यह किताब रंगकर्मियों को लक्ष्य कर लिखी गयी है मगर इसमें कई अध्याय ऐसे उपयोगी बन पड़े हैं, जो सभी के लिए लाभदायक हैं।

डॉ० मेहता ध्वनि या वाणी तथा बोलना (स्पीच) का अंतर समझाते हुए कहते हैं—''ध्वनि या वाणी जन्मना, नैसर्गिक वरदान है। बोलना सीखना होता है।'' बोलने की स्थिति पर सामाजिक परिवेश का भी खूब असर पड़ता है। प्रकृति ने जो बोलने का संयंत्र मनुष्य को दिया है अगर उसका ठीक से इस्तेमाल होता रहे तो सुनने वाले निश्चय ही कथ्य समझ लेंगे। बोलने का एक ही उद्देश्य है कि जो कहा जाए, वह सुनने वाले को समझ में आ जाए। इसके लिए वाचिक अभिव्यंजना के लिए क्या जरूरी बातें हैं, इन पर भी डॉक्टर साहब ने विस्तार से लिखा हे। बलाघात और विराम के उपयोग के द्वारा वाणी की सही प्रभावशीलता रची जा सकती है और बोलने को सार्थक किया जा सकता है। भाषणकर्त्ताओं को डॉ० मेहता सीख देते हैं—''विषय पर, अपने आप पर और श्रोताओं पर अधिकार प्राप्त करने का लक्ष्य होना चाहिए।'' इसी तरह काव्य-पाठ करने की कला पर उन्होंने विस्तार से प्रकाश डाला है। वे कहते हैं—''काव्यपाठ करने वाले को पिंगल शास्त्र का अध्ययन करना चाहिए, लघुगुरु, वर्ण, मात्रा, यति, गति, लय, अलंकार से परिचित होना चाहिए तभी वह छंद के बंधनों से मुक्त कविता को भी निराले ढंग से पढ़ सकेगा।'' इस सामान्य काव्य पाठ कला पर प्रकाश डालने के बाद वे रंगमंच पर होने वाले काव्यपाठ की विशेषताओं पर भी प्रकाश डालते हैं। काव्य की व्याख्या को वह पाठकर्त्ता के हिस्से का जरूरी काम नहीं मानते हैं। इसी तरह 'नाट्य पाठ' को भी मंचन से पूर्व का जरुरी कलाभ्यास मानते हुए डॉ० मेहता कहते हैं—''छोटे-छोटे पढ़न्त क्लब बनाए जाने की जरूरत है जिनमें ऐसे पाठ सुचारु रूप से चलाए जा सकें।''

'दोष दर्पण' नामक अध्याय में वाणी में आने वाली मलिनता अथवा दोष पर विचार किया गया है। पहला दोष लहजे का है। शीन क़ाफ़ दुरुस्त रखने वाले उर्दू के लोग हिन्दी के संयुक्ताक्षर नहीं बोल पाते। 'प्रसाद' उनके लिए 'परशाद' हो जाते हैं। इसी तरह अंग्रेजी और फारसी जानने वाले हिन्दी, संस्कृत, मराठी के कई शब्द नहीं बोल पाते। उच्चारण दोष का एक कारण 'दंत विकार' भी होता है। प्रतिक्षेप (रिबाउंड) भी एक दोष है। इसमें व्यंजन वर्णों के बीच एक निरर्थक व्यंजन घुसा दिया जाता है। जैसे 'ठीहीक है' या 'पंज्याब मेल से जाएंगे' आदि। नाक से बोलना भी एक प्रमुख बीमारी है। कुछ लोग 'अतिरंजना' के शिकार होते हैं। उनके बोलने में इतने उतार-चढ़ाव होते हैं मानों पहाड़ों की सैर कर रहे हों। कुछ लोग तकिया कलाम के दोषी होते हैं। इनके अलावा रोग अथवा अस्वस्थता से उपजे वाणी दोष पर भी लेखक ने विस्तार से प्रकाश डाला है।

डॉ० मेहता ने कुछ प्रमुख सलाहों को भी सामने रखा है। मसलन बोलें कम- सुनें अधिक। बोलते समय श्वास स्वाभाविक बनाए रखें। शुभ-शुभ बोलें। इसके अलावा आवाज की रक्षा के भी कुछ उपाय बताए गए हैं। जैसे गर्म हवा भरे कमरे में बोलने के बाद ठंडी हवा में जाना पड़े तो कुछ देर चुप रहें, केवल नाक से साँस लें। भाषण देने से पूर्व ठंडा पेय और पश्चात गरम 'हाट' पेय लेना चाहिए।

वाणी और श्रावकता के कुछ खेल भी इस पुस्तक में बताए गए हैं। इनसे वाणी, भाषा और चेतना की तवरा के अभ्यास सम्भव हैं। किताब में 'परिशिष्ट' के भीतर भी कई आलेख दिए गए हैं। इनमें भरत निरूपित वाचिक अभिनय का अध्याय काफी सूचनात्मक है। भरत ने कहा है—''अभिनेताओं को वाणी के विषय में विशेष प्रयत्न करना चाहिए।'' उन्होंने 'नाट्यशास्त्र' के 14वें अध्याय में वाचिक अभिनय का प्रधान्य, वाणी के विभाग, दो तरह का पाठ्य आदि पर विस्तार से प्रकाश डाला है। आज के दौर में इनकी जरूरत रंगकर्मी को जरूर पड़ती है। बोलने की कला रंगसृष्टि की पहली सीढ़ी भी है। महेश आनन्द के अनुसार एक श्रेष्ठ अभिनेता को कान की अपेक्षा आँख के लिए बोलना चाहिए, तभी उसकी क्रियाएँ भी बोली गयी क्रियाएँ बनेंगी।

प्रकारांतर से 'बोलने की कला' इसीलिए महत्वपूर्ण भी मानी जाती है। यह पुस्तक इस कला के बारे में बहुत कुछ बोलती है और इसमें विभिन्न प्रसंगों पर वैज्ञानिक ढंग से विचार किया गया है। यह एक जरूरी किताब है। — **प्रदीप तिवारी**

बोलने की कला
लेखक : डॉ० भानुशंकर मेहता
मूल्य : 250 रुपये

अध्येता तथा पुस्तकालयों के लिए संग्रहणीय ग्रन्थ

साहित्य समीक्षा

आधुनिक हिन्दी आलोचना : संदर्भ एवं दृष्टि *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 150.00
काव्यरस : चिन्तन और आस्वाद *डॉ० भगीरथ मिश्र* 50.00
नया काव्यशास्त्र *डॉ० भगीरथ मिश्र* 80.00
काव्यशास्त्र *डॉ० भगीरथ मिश्र* 180.00
पाश्चात्य काव्यशास्त्र : इतिहास सिद्धान्त और वाद *डॉ० भगीरथ मिश्र* 150.00
मध्यकालीन अवधी का विकास *डॉ० कन्हैया सिंह, डॉ० अनिलकुमार तिवारी* 160.00
भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 250.00
कबीर और भारतीय संत साहित्य *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 180.00
तुलसीकृत विनयपत्रिका का काव्यशास्त्रीय अध्ययन *डॉ० रामअवतार पाण्डेय* 320.00
हिन्दी संत काव्य : समाजशास्त्रीय अध्ययन *प्रो० वासुदेव सिंह* 320.00
संत कबीर और भगताही पंथ *डॉ० शुकदेव सिंह* 130.00
वाग्द्वार *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 250.00
वाक्सिद्धि *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 160.00
वाग्दोह *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 200.00
हिन्दी साहित्य : विविध परिदृश्य *डॉ० सदानन्दप्रसाद गुप्त* 160.00
नियति साहित्यकार की *डॉ० सुधाकर उपाध्याय* 80.00
भारतेन्दु के नाट्य शब्द *पूर्णिमा सत्यदेव* 100.00
सौन्दर्यबोध और हिन्दी नवगीत *डॉ० माधवेन्द्रप्रसाद पाण्डेय* 250.00
हिन्दी काव्य में हनुमत्-चरित *डॉ० मीनाकुमारी गुप्ता* 400.00
साहित्य, सौन्दर्य और संस्कृति *सं० डॉ० रतनकुमार पाण्डेय* 150.00
साहित्य और संस्कृति *डॉ० कन्हैया सिंह, डॉ० राजेश सिंह* 140.00
हिन्दी का गद्य साहित्य *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 400.00
फणीश्वरनाथ रेणु और उनका कथा साहित्य *डॉ० रागिनी वर्मा* 320.00
क्रांतिकारी कवि निराला *डॉ० बच्चन सिंह* 120.00
अक्षर बीज की हरियाली *डॉ० वेदप्रकाश अमिताभ* 180.00
रघुवीर सहाय की काव्यानुभूति और काव्यभाषा *डॉ० अनन्तकीर्ति तिवारी* 80.00
सर्वेश्वरदयाल सक्सेना और उनका काव्य संसार *डॉ० मञ्जु त्रिपाठी* 100.00
कथा राम कै गूढ़ *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 125.00
मानस-मीमांसा *डॉ० युगेश्वर* 250.00
अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद' *सं० पुरुषोत्तमदास मोदी* 150.00
प्रसाद की चतुर्दशपदियाँ *डॉ० किशोरीलाल गुप्त* 50.00
कबीर-वाङ्मय (पाठभेद, टीका तथा समीक्षा सहित) *डॉ० जयदेव सिंह तथा डॉ० वासुदेव सिंह*
प्रथम खण्ड : रमैनी 80.00
द्वितीय खण्ड : सबद 250.00
तृतीय खण्ड : साखी 250.00
प्रगतिशील काव्यधारा और त्रिलोचन *डॉ० हरिनिवास पाण्डेय* 150.00
प्रगतिशील आलोचना की परम्परा और डॉ० रामविलास शर्मा *डॉ० राजीव सिंह* 140.00
आधुनिक हिन्दी कविता का वैचारिक पक्ष *डॉ० रतनकुमार पाण्डेय* 400.00
हिन्दी व्यंग्य साहित्य और हरिशंकर परसाई *डॉ० मदालसा व्यास* 200.00
मिथकीय कल्पना और आधुनिक काव्य *डॉ० जगदीशप्रसाद श्रीवास्तव* 120.00

कहानी (मौलिक कृति)

एक राजनेता की कुण्डली *एक भारतीय* 70.00
अन्नपूर्णानन्द रचनावली (हास्य-व्यंग्य) *अन्नपूर्णानन्द* 150.00
आखिरी हँसी *निशांतकेतु* 30.00
समकालीन हिन्दी कथा-लेखिकाएँ *सं० डॉ० रामकली सराफ* 75.00
लाल हवेली *शिवानी* 60.00
दिल का पौधा *अलीम मसरूर* 45.00
मुद्रिका रहस्य *शरद जोशी* 60.00
आँगन में उगी पौध *डॉ० कुसुम चतुर्वेदी* 140.00
मुट्ठी में बन्द तूफान *अनिन्दिता* 95.00
प्रश्नचिन्ह तथा अन्य कहानियाँ *अनीता पण्डा* 80.00

उपन्यास

हस्तिनापुर का शूद्र महामात्य *युगेश्वर* 140.00
चरित्रहीन *आबिद सुरती* 180.00
बबूल *डॉ० विवेकी राय* 40.00
पांचाली (नाथवती अनाथवत्) *डॉ० बच्चन सिंह* 125.00
ननकी *बच्चन सिंह (पत्रकार)* 60.00
तरुण संन्यासी (विवेकानंद) *राजेन्द्रमोहन भटनागर* 120.00
सागरी पताका *राधामोहन उपाध्याय* 250.00
मैत्रेयी (औपनिषदिक उपन्यास) *प्रभुदयाल मिश्र* 120.00
नसीब अपना-अपना *विमल मित्र* 40.00
मुझे विश्वास है *विमल मित्र* 60.00
महाकवि कालिदास की आत्मकथा *डॉ० जयशंकर द्विवेदी* 80.00
गाँधी की काँवर *हरीन्द्र दवे* 40.00
बहुत देर कर दी *अलीम मसरूर* 60.00
मंगला *अनन्तगोपाल शेवड़े* 30.00
लोकऋण *डॉ० विवेकी राय* 80.00
बनगंगी मुक्त है *डॉ० विवेकी राय* 50.00
चौदह फेरे *शिवानी* 100.00
ललिता (तमिल उपन्यास का अनुवाद) *अखिलन* 25.00
बज उठी पायलिया (इळंगोवडिहळ् रचित शिल्पपदिकारम्) *रा. वीलिनाथन्* 50.00
नया जीवन *अखिलन* 60.00
आओ लौट चलें *न्यायमूर्ति गणेशदत्त दूबे* 40.00

नाटक, एकांकी (मौलिक तथा सम्पादित)

देवयानी : उत्कृष्ट पौराणिक नाटक *डॉ० एन्० चन्द्रशेखरन् नायर* 20.00
मांदर बज उठा (रेडियो नाटक संकलन) *अनिन्दिता* 150.00
शताब्दी पुरुष *राजेन्द्रमोहन भटनागर* 100.00

हास्य व्यंग्य

मुद्रिका रहस्य *शरद जोशी* 60.00
अन्नपूर्णा रचनावली *अन्नपूर्णानन्द* 150.00

ललित निबन्ध

वाणी का क्षीर सागर *कुबेरनाथ राय* 120.00
जगत तपोवन सो कियो *डॉ० विवेकी राय* 100.00
किरात नदी में चन्द्र-मधु *कुबेरनाथ राय* 80.00
कहीं दूर जब दिन ढले *डॉ० गुणवन्त शाह* 40.00

मनीषी, संत, महात्मा

शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान *सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव* 150.00
करुणामूर्ति बुद्ध *डॉ० गुणवन्त शाह* 25.00
महामानव महावीर *डॉ० गुणवन्त शाह* 30.00
मारण पात्र (योगी, साधकों तथा तांत्रिकों के चमत्कार) *अरुणकुमार शर्मा* 250.00
मनीषी की लोकयात्रा (म०म०पं० गोपीनाथ कविराज का जीवन-दर्शन) *डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह* 300.00
ज्ञानगंज *पं० गोपीनाथ कविराज* 60.00
साधुदर्शन एवं सत्प्रसंग भाग 1-2 *पं० गोपीनाथ कविराज* 80.00
साधुदर्शन एवं सत्प्रसंग 50.00
योगिराज तैलंग स्वामी *विश्वनाथ मुखर्जी* 40.00
सूर्य विज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव : जीवन और दर्शन *नन्दलाल गुप्त* 140.00

योगिराज तैलंग स्वामी *विश्वनाथ मुखर्जी* 40.00
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा
तत्त्व कथा *म०म०पं० गोपीनाथ कविराज* 250.00
महाराष्ट्र के संत-महात्मा *ना०वि० सप्रे* 200.00

'राष्ट्रपति ए०पी०जे० अब्दुल कलाम' पुस्तक का लोकार्पण

अजमेर होटल मानसिंह में महामहिम राज्यपाल अंशुमान सिंह की अध्यक्षता में वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० रामगोपाल गोयल की सद्य: प्रकाशित पुस्तक 'राष्ट्रपति ए०पी०जे० अब्दुल कलाम' का लोकार्पण भारत सरकार के मानव संसाधन मंत्री श्री मुरलीमनोहर जोशी ने किया। डॉ० जोशी ने ऐसी कृति लिखने के लिए डॉ० गोयल को बधाई देते हुए कहा कि आज की युवा पीढ़ी को ऐसी प्रेरणाप्रद पुस्तक पढ़ कर लाभ उठाना चाहिये।

इफ्को के श्रेष्ठ उपन्यास संकलन में 'लोकऋण'

कृषि उत्पादन बढ़ाने में योगदान करने के साथ ही इफ्को राष्ट्रीय प्राथमिकताओं को पूरा करने में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती है। साहित्य और समाज के प्रति सचेत कम्पनी ने स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगाँठ 'आजादी की अग्निशिखाएँ' नामक पुस्तक प्रकाशित की थी। इसी क्रम में उनकी साहित्य समिति ने भारतीय भाषाओं के श्रेष्ठ उपन्यासों को संकलित करके उन्हें प्रकाशित करने का निर्णय किया है। विश्वविद्यालय प्रकाशन द्वारा प्रकाशित जाने-माने साहित्यकार विवेकी राय की कृति 'लोकऋण' को उसमें शामिल करने का प्रस्ताव रखा गया है। संकलनकर्ता डॉ० शिवकुमार मिश्र ने बताया कि अनेक कृतियों पर विचार करने के उपरान्त संकलन में श्री राय की कृति को शामिल करने का प्रस्ताव रखा गया है। उनके अनुसार संकलन को सहकारी संस्थाओं, साहित्य प्रेमियों और विश्वविद्यालय आदि में इनका नि:शुल्क वितरण किया जायेगा। इफको के वरिष्ठ प्रबन्धक हिन्दी श्री घनश्यामदास ने विवेकी राय से कहा है कि इफको यह कार्य बिना किसी वाणिज्यिक लाभ के कर रही है। उसका उद्देश्य भारतीय साहित्य को जनमानस तक पहुँचाना और अमर कृतियों को सुरक्षित रखना है।

आज की बात

पुस्तक में तो १५० पृष्ठ ही थे पर ६० पर आलोचकों, ४५ पर इतिहासकारों, १७ पर बुद्धिजीवियों की आपत्ति के बाद पुस्तक में २८ पृष्ठ ही बचे हैं

विश्वविद्यालय प्रकाशन उत्तर भारत का विशाल ग्रंथागार है जहाँ विभिन्न प्रकाशकों की विविध विषयी नवीनतम पुस्तकें उपलब्ध हैं। देश के ही नहीं विदेश के अध्येता विश्वविद्यालय प्रकाशन के नियमित ग्राहक हैं। फोन, फैक्स, इंटरनेट सुविधा से परिपूर्ण।

काशी आने पर विश्वविद्यालय प्रकाशन में अवश्य पधारें। आपका स्वागत है।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 3 **नवम्बर 2002** **अंक : 11**

प्रधान सम्पादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक
परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क
रु० 30.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी
के लिए
अनुरागकुमार मोदी
द्वारा प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी
द्वारा मुद्रित

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-01/2001

रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2002

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)
Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

: (0542) 353741, 353082 ● Fax : (0542) 353082 ● E-mail : vvp@vsnl.com ● vecppl@satyam.net.in